जैतराव जम जैत। नैन लल्लि करि बोलै॥
अहो भीम करि नीम। बत्त पहल्ली तुम भोलै॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै॥
लोक भाष बुझ्झी न। न्योंत बैरी को मिल्लै॥
हम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कहूय मुष बत्तरिय॥
सु विहान बरन यप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम॥
अमत मत्त मंडी मैरन। इह सु कोन भ्रम काम॥ छं० ॥ १३॥

गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कवित्त॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब॥
[1]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ अब॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ॥
अस्ति वस्थ करि सिथल। म्रतक सम बर करि छंड्यौ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिद बान इक मारियौ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी बस्त॥ छं० ॥ १५॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव॥
जैतराव [2]मिलि राम गुरु। लै काने समझाव॥ छं० ॥ १६॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद। चीय कज रावन पंडौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद। मारि अप्पन भ्रम भंडौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल। कज्ज रुकमनि जुध मंडौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान। बंध मुंडवि सिर छंडौ ॥
सुर असुर नाग नर पंषि पसु। जीव जंत चिय कज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की। ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर। कहौ सु कीजै काम ॥
जुद्ध जुरैं चहुआन सौं। ज्यौं इल रष्षै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अन्नाम। जेंन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग। अगनि दीपक दिप्पाइय ॥
पछैं ही भज्जियै। होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी। देहु चहुआन प्रधाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि। गई बत्त बुभझी सु तुम ॥
हंकारि जैत गुरुराव कवि। षग्ग व्याह न न करैं हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब। करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं। न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का बचन।

कवित्त ॥ फिरि जानौ पांवार। राम रघुबंस बिचारी ॥
जीवन जों उब्बरै। मरन केवल संचरी ॥

---

(१) ए.-वैरीचन, बैरीबन। (२) मो.-के बंधव रुकमना।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-सन्नाम।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी॥
स्वामि भ्रम्म तिय तिथ्थ। मुक्कति संसो न बिचारी॥
पांवार सुबल मालव न्रपति। बर समुंद जिम भारयौ॥
बर नीति कित्ति सुर वर असुर। मुगति मथन संभारयौ॥छं०॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को बित्त बिचारिय॥
बर पट्टन दक्खिन्न है। धेन लैहै हक्कारिय॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिझिहै पांवारय॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संम्हौं हक्कारिय॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावद्दिसि रुंधही॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्रप पट्टन धेन॥
कूक कहर बज्जिय बिषम। चढ़िय भीम न्रप सेन॥ छं० ॥ २३ ॥
उंच कंन अनमिष नयन। प्रफुल्लित पुच्छ सिरेन॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन॥ छं० ॥ २४ ॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त॥ औसरि [1]बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै॥
बर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बद्दनवै॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। सूर मानव बर बज्जै॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। झगन हंकि झगपति बढ़िय॥ छं० ॥ २५ ॥

---

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सव।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

हय गय रथ चतुरंग। सज्जि साइक पाइक भर॥
आइ मिले मुषमेल। दुहुन कढ्ढिय असि बर बर॥
[1]तेग मार सिर झार। धुंम धुम्मर हर लुक्किय॥
पऱ्यौ घोर अंधियार। विज्जुरि निसि भ्रम चक चक्किय॥
को गिनै अपर पर को गिनै। लोह छोह छक्कै बरन॥
सामंत सूर जैतह बलिय। कहत चंद जुग्गति लरन॥ छं०॥ २६॥

रघुवंसराय का नाका वांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना।

बर सिप्रा नदि तट्ट। धाइ सामंत जु रुक्किय॥
रोकि मुष्प रघुबंस। धेन पज्जून सु हक्किय॥
दुतिय बीर बर टिके। भीस भारथ जिम लग्गिय॥
सूर बिना प्रथिराज। धके जुरि षग्गन षग्गिय॥
सुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि। औसर षग कढ्ढिय लरन॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि बर। तिरटू झर लग्यौ झरन॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन।

मोतीदाम॥ तुरंगम आउ लह्इ गुर ठाउ। कला [2]ससि संषि जगन्नय पाउ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम। कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम॥
छं०॥ २८॥

मिले जुध जैतरु भीम नरिंद। मच्यौ जुध जानि हतासुर इंद्र॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड। परे भर बथ्थ मरोरत झुंड॥
छं०॥ २९॥

कटक्कहि हड्डुहि गूद करक्क। विछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क। उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क॥छं०॥३०॥

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय।
(२) मो.-सति।

करक्कस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनच्चिय बेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं० ॥ ३१ ॥
करें कर आवध ढंड छतीस। तकै छल सांइय भ्रम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। हसौ जुध रुद्ध अनुद्ध अपार ॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुबार॥
छं० ॥ ३३ ॥
दूहा ॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी ॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं० ॥ ३५ ॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निक्कर्यौ पंचमो भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि महत चंद सो भासमान॥
छं० ॥ ३६ ॥
मानों कि राहु ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बह्लु बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्क लाल॥
छं० ॥ ३७ ॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्क हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों द्दपंति पंषिय सजूह ॥छं०॥३८॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार। मनुं श्रमं इंद्र सज्यो संभारि॥
बिरचै जु सूर बाहै बिहथ्थ। दिषि दूर चढ्ढि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं० ॥ ३९ ॥
भरहरै सब्ब पाइल सुभार। रिन [1]रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं० ॥ ४० ॥

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।
† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

झक झक उझक्क वद्दल दिपीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव ॥
कट हित्त सूर जोधाइ मुक्कि। कहुंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥छं०॥४१॥
दुह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन। जानिये चीय वयसंधि तेन ॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर ॥
छं० ॥ ४२ ॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त ॥ संझ हेत बहि सार। मार [2]करि तुट्टि सनह रिझ ॥
सो ओपम कविचंद। अंग छुट्टे कि बाल षिझ ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै ॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै ॥
यों भन्यौ सेन सम बर सुभ्भर। नन हान्यौ जित्यौ न कोइ ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी। निस कढ्ढी बर बीर होइ ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

हौत प्रात सामंत। पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय ॥
मीती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय ॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट। पंत्ति मंडी [5]गुन राजै ॥
[6]लाल रुप कविचंद। मद्धि कनइक दुति साजै ॥
[7]नालौव रुप लीनो बरन। राम्र सुबर रघुवंस भिरि ॥
कोदनि सुरंग पंती करिय। बीय सहस पुंडीर परि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

युद्ध वर्णन।

मालती ॥ तिय पंच [8]गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे ॥
मालतीं छंद, सुचंद जंपय, नाग घग मिलि, चित हरै ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नीर। (२) मो.-कहि।
(३) मो.-ओट। (४) मो.-सुध। (५) ए. कृ. को.-गुर।
(६) ए. कृ. को.-लाज। (७) मो.-नालीच।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह झिल मिल, निकरे॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कबि, मानयौ॥
मनौं बिट्ठ जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं॥
धन सूर धार, अधार जून जिन, धार धार, जनेकियं॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निड्डयं॥
मनु रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझझ्झयं॥ छं० ॥ ४७॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त॥ दिन पल्लट्यौ पांवार। सत्र बाद्दै सत्रन पर॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बीध्यौ सुरंग नर॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ। दई बर भंभर नैनी॥
कविचंद छंडायौ बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी॥
धनि सूर बीर सामंत हौ। [3]जुमर जुद्ध इत्तौ करी॥ छं० ॥ ४८॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा॥ मीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज॥ छं० ॥ ४९॥

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

जो मति पच्छैं उप्पजै। सो मति पहिले होइ॥
काज न विनसै अप्पनौ। दुज्जन हँसे न कोइ॥ छं०॥ ५०॥

आदर करि आने सु ग्रह। भगति जुगति बहु कीन॥
जे भर घाइल उप्परे। जतन जिवाइ सु दीन॥ छं०॥ ५१॥

षग विवाह भीमंग रुचि। बाजे बज्जन लग्गि॥
मंगल मिलि अलि गावहीं। गौष-गौष निस जग्गि॥ छं०॥ ५२॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी॥ रची बेदिका बंस सोब्रन्न सोहै। जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै॥
लगी बेद विप्रान सों [1]गान भांईं। रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांई॥
छं०॥ ५३॥

हसे तर्क-वित्तर्क हासं सुरासं। घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं॥
उड़ै बीर [2]गोधूरकं वास रेनं। करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं॥
छं०॥ ५४॥

चवै छंद बंदी ननं पार जानं। करे दान हेमं सु विद्या बिनानं॥
भई प्रीति जेतं सुरं कुव्विरानं। तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं॥
छं०॥ ५५॥

दूहा॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि। दिय पुची भीमानि॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी। कलह कुसल बर बानि॥ छं०॥ ५६॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन।

नाराच॥ कन्यौ सुन्हांन कामिनी। दिपंत मेघ दामिनी॥
सिंगार षोडसं करे। सु हस्त दर्पनं धरे॥ छं०॥ ५७॥

वसन्न वासि वासनं। तिलक्क भाल [3]भासनं॥
दुनैन ऐन अंजए। चलं चलंत पंजए॥ छं०॥ ५८॥

(१) मो.-मान। (२) मो.-केदमु। (३) मो.-तासने।

सुहंत श्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५९ ॥
अनेक जाति जालितं । धरंत पुप्फ मालितं ॥
झँकार हार नौपुरं । घमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्टिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कनक नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल वानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रुप सारदं । सरन्न रुप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा ॥ करि शृँगार अलि अलिन सँग । रिम झिम झुंडन मंझ ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हयलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । मुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरीं । कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक क्रियाभ ॥
पतिव्रत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति लुप्पै (१)लुप्पै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो.-छप्पै ।

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति॥
दुहुं जस न्रम्मल छंद [2]गुन। पढ़न कविन इह रीति॥ छं०॥ ७०॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त॥ धनि सामंत समथ्थ। जेन न्रप बिन जुध जित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किड्डि विदित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बरनी बर संध्यौ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमंग [3]रन बंध्यौ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर॥
बैसाष मास अष्टमि सितह। कित्ति संचरिय देस पर॥छं०॥७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। हट्ट पट्टन की सोभा॥
गौष गौष जारीन। दिष्षि त्रिय नर सुर लोभा॥
भूंगल [1]भेरि नफेरि। नद्द नीसान म्रदंगा॥
नाना करत संगीत। ताल सौं ताल उपंगा॥
गरजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर। न्रप प्रवेस सुंदरि करि॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ। प्रथक प्रथक परसंस करि॥छं०॥७२॥

दहेज वर्णन।

च्यार अग्ग च्यालीस। मत्त अप्पे गजराजिय॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस चव [2]अप्पि सु पाजिय॥
दुक अमोल सुंदरी। सत्त तिय दासिय बिंटिय॥
सबै सथ्य सामंत। रहे भर करिय अमिंटिय॥
सामंत करी प्रथिराज बिन। करै न को रबि चक्क तर॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै। गए बीर अष्टमि सु घर॥छं०॥७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना।

(१) मो०-गुर। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भौर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना ।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कवित्त ॥ मेषग्गाही सेन । दंड पलथौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गष्पर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्पर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर संगै संग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्‍यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना ।

(१) ए. कृ. को.-बीर । (२) ए. कृ. को.-चहुआन ।
(३) मो.-निगली ।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल्ल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुगंध। दीप दस दिसि इत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साजं सु सबानं ॥
न्रप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल्ल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७९ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवनं हंसह सरन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देषि भूल्यौ न्रपति। रचिय विरंचि विहद्द ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं मुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्रबल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
स्रृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान विभाछ रस ॥
अद्भूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त ॥ किहिं भेषत प्रथिराज। किहित भेषत चिहु पासं ॥
किहि भेषत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हासं ॥
किहि उंमाह उच्छाह। कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद। देव गुरुराज्ञ विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी। कमल गहनं सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल। तपै तुंग चहुआन बर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव षिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ [१]ग्रह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास। फेरि सु विहान पलांन्यौ ॥
षट्टू बन प्रथिराज। बहुरि आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्थहन को। बर बराह बर षिल्लइय ॥
दैवान जोध चहुआन बर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू बन में शहावुद्दीन के दूत का आना।

सत चीना द्वादसति। स्वांन अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग्ग. च्यालीस। सीह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त म्रग अच्छ। सत्त दह अग्गति [२]पाजी ॥
आषेटक प्रथिराज। बीर ओपम अति राजी ॥

---

(१) मो.-बर। (२) ए.-षाजी।

उप्परति राय षट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं० ॥ ३॥

पृथ्वीराज का सामतों से सलाह लेना।

मुक्कि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर षरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हुसेन सु मग्गे॥
इष्ट भक्त अवसान। दिए कग्गद लिपि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्हौ षरिय॥
चालंत जेम लग्गत दिवस। झुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं० ॥ ४॥

दूहा॥ वेगि सूर सामंत सह। मिलें जाइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं० ॥ ५॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रण सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर मंगै चहुआन॥ छं० ॥ ६॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि जानौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुस्संग। साहि [4]जानौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कवहुक घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दीसै फिरत। भावी गति दिष्षी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नही जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

(१) मो.-वुलाये। (२) मो.-सुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. जादौ।

अरे ढीठ वस्सीठ। कौन हार्‍यौ को जित्यौ ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ। कोन वित्तग अब वित्यौ ॥
पंच तत्त पुत्तरी। पंच हथ्थन कर नच्चै ॥
अजै बिजै गुन बंधि। चित्त तामस रस रच्चै ॥
बंछै जु सुष्य फल राजगति। वह करतार सु नन करै ॥
उच्चरै किंत्ति छल ना रहै। तब लग्गै गल बल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै बार मैंने उसे बंदी किया।

दूहा ॥ कै कोसां ढिल्ली धरा। कै कोसां गज्जान ॥
षंडा सौ [2]कर बंधिया। चहुआना [3]सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन बर। बर बंध्यौ सुरतान ॥
उठ्ठाए बस्सीठ बर। बर बज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लहु, पंच गुरं। षग पन्न हरे बिष पत्त [4]बरं ॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छबी। कहि मोदक छंद प्रमान कबी ॥
छं० ॥ ११ ॥
जु सज्जी चतुरंगन दान दियं। कबि दोउअ सेन उपम्म कियं ॥
[5]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति पढ़ी। सति सीतल [6]बात प्रमान बढ़ी ॥
छं० ॥ १२ ॥
बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं। तिन की छबि पावस सज्जि घनं ॥
सु बजे बर बीर निसान बजं। सु मनों घन पावस सज्जि गजं ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-त्रिन। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को.-षुरसान।
(४) मो.-हरं। (५) मो.-सत। (६) ए. कृ. को.- बाल।

* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है।

बजपवत बीर जंजीरन सूर। कँपै सुर बीर पयालनपूर॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि बिथ्थुरियं। मुदरी द्रग अठुत धुंधरियं॥
छं० ॥ १४॥

तिह ठौर रसं अप बंधब से। तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे॥
बर जग्गत नेन सु मेन मुचें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें॥
छं० ॥ १५॥

श्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रब्ब बलं बर बंसु तनं॥
कल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर सजादन लाज लियं॥
छं० ॥ १६॥

सहनाइय सिंधुअ अहरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढियं॥
छं० ॥ १७॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव थौं उप्पटी सेनं॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि॥ छं० ॥ १८॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया॥ इह सु राज आतुर [1]धरिय। सुरतानह प्रथिराज॥
भूमि भार कछु [2]बढ्यौ। सो उत्तारन [3]काज॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह॥
तिन अर बस चर परे। को इन [4]छट्टै मति हीनह॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [5]सुरह। चक्कई चक मुक्कै नहीं॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परै। दया न किज्जै मन इही॥ छं० ॥ १९॥

---

(१) ए. कृ. को.-धरिय। (२) ए. कृ. को.-छंटयौ।
(३) मो.-पार। (४) मो.-छंडै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल । दूत सपत्ते आइ ॥
चर चरित्त चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त ॥ नहिंन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥
बर इंद्रह दीसै न । महल मंड्यौ सु दुहु निसि ॥
जबहीं हंम संचरे । काल तबहीं दिसि पासं ॥
परत वाह लष्यंत । दिष्ट देवन सुष वासं ॥
लच्छीन [2]ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
मेलान कोस परपंच को । गौरी वै संम्हौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरबीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना ।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल । बंटि सेन सु बिहान ॥
कांइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हांइ हाइ कहि सबहि । चरनि वरज्यौ सु विहानं ॥
भुभंभ रहै कै [3]जाइ । जु कछु पत्तौ चहुआनं ॥
बरन मेच्छ बर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥
जय जानी अन चंप । पंच चतुरंग सु भेरी ॥
भुअ बीर रूप गोरी सु बर । मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम ॥
पलटयौ भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।
उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान भय ॥

(१) ए. कृ. को.-पुल ।   (२) ए. कृ. को.-त्रीय ।
(३) मो.-नीय ।   (४) मो.-तट ।

गोरी वै भौ राह रयन हर झिग्गई।
गज असवारन सूर निव्रत्त सु लग्गई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अच्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरह भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चल्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं ॥
रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, ताय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुभंत जरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनौं मेघ बरषत विज्ज कोंधत, अभ्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरवर बरुन बारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ्थ पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
चय लष्प मीरति साह गोरिय, भार भ्रुझ्झ्झ अलुझ्झवै ॥
षुरसान षान अरक्क आरवं, सज्जि सेन [5]सझ्झंझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग। लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह। तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-उडन। (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्धता, छविद्ध।
(३) मो.-झलकंत। (४) ए. पुज्जनै। (५) ए. कृ. को.-अंवझवै।

जु सजे हय गोरियसाहि षरे। तिन देषि रबी रथ के बिसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी। सु मनों नदि पूर छिल्ली दुसरी ॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं। गुरु बंक पिषं मन कै चढ़तं ॥
बजि बाज कुह्ल धर सद्द षुरं। सु मनों कठतार बजंत तुरं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह्ल गुरं सित सोभ षगे। मनों सेत वेऊरन भान रुगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं। मनु उट्ठि किरन्न सु पाल्ल परं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बिय ओपम चंद बनी बनिकैं। सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं ॥
जग हथ्थ बनें हय के सिरयं। गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बरयं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्षर सोभ करै तनयं। मनु अर्क्क अरक्क बिचें घनयं ॥
तिनकी हंर वाय फुलिंग सजै। सु कहैं कविचंद कुरंग लजै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं। [2]मग मत्त मनों बहरें बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी। हय नष्षत रागन सांस कढ़ी ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बिय बाय अरक्कन बंध चढ़ै। कविचंद पवन्नन बाद बढ़ै ॥
सु उड़ै नन धावत धूरि षुरं। गतिमान सुसील विसाल उरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंझत अश्वत आतुरयं। विरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अपार अबद्ध परी। मनु गावहि इंदुन बंध धरी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पियं भत्तन साहि बरं। जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.-कविचंद। (२) ए. कृ. को.-मन।

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उट्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1] मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2]डम्मरी उट्ठि आकास छाइ ॥
अचरनचरन गोरीस [3]साईं। सेन चहुआन हथ्थें बनाई ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावद्दिसि अरुनग्ग ॥
सुष गोरी चहुआन भिरि। ज्यौं रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चौपाई ॥ समद्धौ रन चहुआन सपट्ठिय। वज्जिग वाय सुझिभान [4]नदि उट्ठिय ॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दौं। सुझिझ न अंष कन्न सुनि नद्दौं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सम्हौ सुरतानं ॥
दिसा स्हल दिसि बाम। बैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहक मझझा घूघू वहक ॥
आकास मांझि गज्यौ गयन। परौं बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ ज्यौं जगदीसह कान दै। तकसी रन किहुं कौन ॥
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें। भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

---

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए..समाई। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य बजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी॥ परैं धाइ धीइ दीन हीनं न जुद्धे। मुषं मार मारं तिनं मान सद्धे॥
परी आवधं होड़ बज्जै निसानं। बजे हक्क सूरं दमामें न जानं॥
छं०॥ ४६॥

बढ़ै आवधं हथ्थ सामंत सूरं। घुरं वै निसानं बजै जैत [1]पूरं॥
कढ़ै बे सनाहं झनक्कं उतंगी। मनों आवधं हथ्थ बज्जै चिनंगी॥
छं०॥ ४७॥

परै पीलवानं मदं [2]मरक दंती। ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती॥
फुरै हथ्थ जनं मुरक्की उरक्की। मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की॥
छं०॥ ४८॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती। ग्रस्यौ राह सूरं छुटै नभ्भ हुंती॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै। सदं तीतरं जेम सौं पच्छि गज्जै॥
छं०॥ ४९॥

वहैं सीर गोरी पछै दै सभानं। भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं॥
तुटै सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चैं। चलै रुद्धि धारं चिह्नं पास गच्छैं॥
छं०॥ ५०॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं। लगे धार धारं रजं रज्जकीसं॥
छं०॥ ५१॥

मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुंढी लुथ्थि पावै न नद्दी वहानी॥
मनं मोद लै सीस मुद्राह कीनी। ....॥ छं०॥ ५२॥

(१) मो.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-सरक दंती।

उठं-उर्द्ध सीसं उपंमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धों श्रोन लालं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोपरीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्यि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ त्रतिय पहर पर पहर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क बनि सेन। स्त्र सामंत परष्यिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर [2]सु विहान परक्किय॥
कर बार धारि सिप्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिझि नंष्यौ है नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डिय नाल चमंकि। मझझ धुंधर छबि लग्गिय॥
रबि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाहु गहि॥

(१) मो.-वक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्पर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्थम्यौ। सूर बर सिंधु [1]सपन्नौ।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपन्नौ॥
साषला सूर [2]सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनौ॥
केहरी गौर अजमेरपति। पऱ्यौ भुभिक्ष रन भाइनौ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्ती धवलाइ॥
सैसब में जुव्वन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ॥ ५८॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त॥ जाम निसा पाछली। सेन सज्जिय दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयौ। करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कढ्ढिय॥
अदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ कित्तौ कला। लरन मरन तकसीर नन॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ पऱ्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी [3]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुऱ्यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंद्रं॥
छं० ॥ ६०॥
अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पऱ्यौ जानि वाराह पारद्धि रोहं॥
छं० ॥ ६१॥
कटे कंध.बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे॥
ननं अश्व चल्लैं चलैं हथ्थ रोजं। ननं चित्त चल्लै रवी रथ्थ दोजं॥
छं० ॥ ६२॥

(१) मो.-सथत्तौ। (२) मो.-सामंत। (३) ए. कृ. को.-राज।

घनं•अश्व फेरें चलै अश्ववाहं । तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं ॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलंट्टं । चितं हत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

बरं कज्ज माला ग्रहौं रंभ सथ्थं । चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई ॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि [1]हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं । करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै बिड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुक्ती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना ।

दूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान ॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बौंटि चहुआन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ।

भुजंगी ॥ परी वींट गोरी मुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं । पर्यौ धाइ पावार भर सलष दिन्नं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ। तहां मीर मारूफ अग्गैं गुरायौ ॥
घरी अद्ध झुझ्यौ करी छत्र धारं। बहै सब्ब सामंत विचि तौन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-हड्डडड्ड ।

तुटै आवधं सब्ब अरि हथ्थ लाज्जी। तबै आइ सीसं [1]गुरज्जं त वाजी॥
गजं गहन प्राहार निठ्ठें ढहायौ। तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त ॥ गहिं गोरी सु विहान। हथ्थ आप्यौ चहुआनं॥
चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सुरतानं॥
गोरी वै हुस्सेन। बीर [2]तुट्टे आहुट्टिय॥
मान तुगं चहुआन। साहि सुष के बल घुट्टिय॥
मध्यान भान प्रथिराज तप। बर समूह दिन दिन [3]चढ़े॥
जस जोति मंत संभर धनिय। चंद बीज जिम बर बढ़ै॥छं०॥ ७२॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः॥ ३४॥

(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज। (२) ए. कृ. को.-घुटे। (३) मो.-चढ़े।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गों करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चल्लिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीत्तौं न्रप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उभ्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचंना अति हूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो.-मिस । (२) मो.-भग्गै ।
(३) मो.-दिसौ । (४) ए. कृ. को.-भोट ।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ । (६) ए, कृ. को.-जौ इचदा । (७) मो.-भावी ।

हूं •नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिर्यौ। कही राज सों बत्त॥
तमकि तोन लीनौ न्वपति। मनों सुजोधन पथ्य॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्य सामंत सूर भर॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो घग बज्यौ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ॥
आहत झरत झारत परत। श्रोन धार 'धर पैर चलि॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त॥ घग वाहिय भिरि भान। अरिन अद्धर धर किन्नौ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ॥
रिझरु लिंग उत मंग। अमिय विष जंग सु ढरयौ॥
ठंडौ मंडि अमंध। नहि भौ अंग जु परयौ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ॥ छं० ॥ ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ स्रम भिलाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर कल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिट्ठह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहुं त मंस कहुं अंस। हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान् शिवथान। थान देषिय न जम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीष चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यौ सु रथं रबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे झंकुरन भान छबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हलत नीर काइर मुषन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
द्रिन पति पतन्न सह तेष्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥ छं० ॥ १० ॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नही मेट सकती।

तब कंगुर पाल्हंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भरं मरन। सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो.-भय। (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक। (४) मो.-उप कंठं। (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुरानन भग्गिचित टारि रथ भग्ग मुग्गेली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है। (६) मो.-सह।

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी ॥
[1]सोभति अनेक जानै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावौ विगत्ति हों प्रक्रति हौं। तो प्रधान झूठह कहै ॥ छं०॥ ११ ॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भ्रमित गमंत बरु आइय॥
भोटी न्रप कन्हा [2]पै आइय। काली कन्ह कि हंकि जगाइय॥
छं० ॥ १२ ॥
तब कन्हा परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल ॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं॥
स्वामि बचन किन्नौ परमानं। लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं॥
छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि॥
बर बंसी [3]ससिपाल। पलहं आयौ सु सेन सचि॥
लष्ष एक असवार। लष्ष दह पाइल भारी॥
अप्प सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उच्चारी॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन सुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा। सामंता कुंडल फिरिंय॥ छं०॥ १५॥

(१) ए. कृ. को. मो भति। (२) ए. कृ. को.-पै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुबंस प्रधान। राज मंत्री बिचारिय ॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह। धरा पड्डर नद घाटं ॥
अव्व जान त्रिमान। कौन पड्डर [1]बन बाटं ॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक मंत जंपौ सु तुम ॥
जालंधराज जंबू धनी। स्वामि भ्रम्म [2]मंडहित हम ॥ छं० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्रप अग्गै ॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गै ॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़ै संग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई ॥
बन बिकट जूह परबत गुहा। बर बेहर बंकम बिषम ॥
दारुन्न भयानक अति सरल। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम ॥
छं० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी ॥ बनं जा विषंमं विषं बाज कंटं ॥ घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं ॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं। जिनै वास आसं लगे पंक मोरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

घनं पामरं जाति बंधै धनंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै मनंकी ॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं। [3]जितें सद्दया सद्द ता अंग मोरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) मो.-बर। (२) मो.-मंडहि-न हम। (३) मो.-जिनें।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। इकं इक्क पच्छै बिपं जन्न जोरं॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उट्ठै। सुनै कन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै॥
छं० ॥ २० ॥

इकं होइ राजं पथं सत्त [1]रुद्धै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्धै॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं। ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं॥
छं० ॥ २१ ॥

न्रपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुबंस अरिसेन भानं॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ बीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय॥
ताजी तुंग सु अथ्थि। जेन रुक्के बर बिय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ट प्रथिराज बर॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं॥
लाज राज विंटयौ। जानि पारस बिंच चंदं॥
श्रीय काज श्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥

(१) ए. कृ. को.-रुंधै। (२) ए. कृ. को.-बंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रथानं। (४) ए.-खान।

स्वामि काज सामंत। बियौ धर मभ्भव जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ षुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चल्यौ काज। बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
दाहिने स्रग्ग संमुह फुनिंद। नौरूप बोल बोलहित हद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥

हंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥

उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]बन्नर विरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न क्रन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत बाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय बाम आनंद कीन ॥छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गट्ट मध्थ। चहुआन प्रिथ्थ रिभ्भेव तथ्थ ॥
हाहुल्लराव दीनौ विरुद्द। आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हल्लकारिय अरि मध्थ ॥
* ताथें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्ले बंदन [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रब्बत बैदेस सधि। बीर बजी रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

(१) मो.-देव।
(२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रत्थ, हथ्थ।
(४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत।
(६) मो.-सगुन।

* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्थ गौ गंठि थाल। अरि अंग षतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अट्ठार टंक पंचै कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति इत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गड्ढ ओछंडि थान ॥छं०॥३५॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रथ्थ नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चट्टि। मंगलिक जानि बब्बौर कट्टि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चित्रसाल। जाअहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य आइ रहै पंचि सास। मानहु कि रचि चित्रह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतऱ्यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चित्रहति साल रष्षीति बाल। नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
द्रुभभवै [3]वाहि मदिरत्ति रिभ्भि। चल्लै न पाइ मानं उलभ्भि ॥
छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए, कृ, को,-पाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे। (३) मो.-नाहि।

देषंत सुमन गति भई पंग । रुट्ठई काम रति कोटि रंग ॥
नट्ठई उगति तिन देषि बाल । मानो कि रास मझ्झें गुपाल ॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना ।

दूहा ॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि । तब लगि दुजति सपन्न ॥
एकल्ल रघुबंस ने । लै गढ़ सबर प्रपन्न ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सबै सूर सामंत । पलह बंध्यौं गढ़ लिन्नौ ॥
थप्यौ राम नरिंद । हथ्थ फुरमान सु दिन्नौ ॥
तुम रहियौ इन थान । जाइ कंगुर सँपत्तौ ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज । राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल । धन समूह आइय सु धर ॥
सुब्भर सुघाइ तेरह परे । बिय दाहिम्म नरिंद बर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

सब भोंटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना ।

सबै भूमि अरि गाहि । आन फेरी चहुआनं ॥
पऱ्यौ भान रघुबंस । बीर बंचे फुरमानं ॥
माल्हन वास नरिंद । राज रघ्यौ तिन थानं ॥
बर बंध्या अरि साहि । घून कढ्यौ परवानं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर । बर रघुबंस बुलाइयौ ॥
दिन देव दसमि बर भूमि बर । तदिन सु रंगन पाइयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

नियत तिथि पर व्याह होना ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन। दिन पञ्चरौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन वृत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु पंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिषत।

बर जंघन मृदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं ॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥
वर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। धम्म काज दीनौ [2]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। चूम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [3]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥
दूहा ॥ आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे त्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-द्रिष्षी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना ।

दूहा ॥ इक तप प्रंग नरिंद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेढक प्रथिराज गय । षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ । भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कीनी ॥
मंन मन्नवै विचार । रूप सिंगार स लीनी ।
लंष्यन वतीस लच्छी सुहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]बक्र विच । दिष्षि न कहुं चक्रंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग वेनि सुनि पीन । कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पद्म पच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि ग्राज गत्ति । नाभि दछना व्रत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु १ जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सौत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सत पच गंध मुष ससिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

(१) मो.-अवरि । (२) को.-चक्र । (३) मो.-सोभतं ।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंम को दूत भेजना।

गाथा ॥ बर बंसी [1]ससिपालं। चिंत्तं अस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [2]बढ्ढै। रिनथंभं [3]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर बीर सपत्ते। जग्गद हथ्थ दिए बर तत्ते ॥
हंसावति अप्पै बर [4]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्ठी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [5]अहुट्ठी ॥
बर कग्गद [6]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडली। भ्रम्म छची जिन भाजन ॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक्क रन। हक्कायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गढ्ढौ करि साहि ॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई ॥
अलए आव संसार। सिद्ध साधकह अथंभह ॥
सब्ब जोग सहकम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपालं। (२) मो.-बढ्ढे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उम्भं।
(५) ए.-उहठी। (६) ए. कृ. को.-बर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यौ।
सद्द मद्द गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ बर बीर मिलानं॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन बेर प्रमानं॥
बर बीर अग्ग बस्सीठ चलि। राजहौ संमुह दिसा॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयौ निसा॥ छं० ॥ ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ॥
रा जद्दव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ स्त्रीय [1]रष्षि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ॥
कपट रष्षि दुरजोध। षग्ग षोहनि दल [2]गोयौ॥
मंतहीन बर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। अजै जान्यौ न पहिल्लौ॥
रनथंभै मंडि छंडी [3]सरन। भिरनं कहौ बर बीर सब॥
ससिपाल बीर बंसी [4]बिलस। हम देषै आयौ सु अब॥ छं० ॥ १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन बलह विनोद। अलह नब्बी घन मंगहि॥
जीवन बलह विनोद। आस आसन्न असुर गहि॥

(१) ए.-रषी। (२) मो.-षोयौ।
(३) ए. कृ. को.-रसनं। (४) मो.-विमल।

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कलि आवन गवन॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन॥छं०॥११॥

भानुराय यद्दव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा॥ रा जद्दव बर भान नैं। [1]बहु मंग्यौ बर हट्ट॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट॥ छं०॥ १२॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। बर पंचाइन ढल्ल॥ छं०॥ १३॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय॥
ता पच्छैं साहाब। षान बंधे तुरकानिय॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय॥
केलीषान कुलाहं। सब्ब सेनी कुटवारिय॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर॥ छं०॥ १४॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा॥ पंचाइन बल पष्परै। [1]यह रनथंभह काज॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज॥ छं०॥ १५॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी॥ ससीपाल बंसी चढ्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्रं धस्यौ आनि पथ्थं॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जै तुरंगा॥छं०॥१६॥

(१) ए. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरझ्झै, उरँनै।

कहै बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ । कहैं अश्व आठू रनंथंभ ठाहौ ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं । उथौ छच सीसं कबी देषि गायं ॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी । ग्रहं अट्ठ मानों ससी मेरछ मंडी ॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेऱ्यौ । मनों भावरी भान सुम्मेर फेऱ्यौ ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना ।

दूहा ॥ घन घेऱ्यौं रिनथंभ पर । लिषि ढिल्ली परवान ॥
तब जद्दव रा भान ने । दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।

कवित्त ॥ रा जद्दव बीराधि । बीर गुज्जह अनुसरयौ ॥
हयदल पयदल गज । अरोहि रिनथँभ यौं अरयौ ॥
धंधेरा धंधेल । चंद ससिपालह वंसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर । जोर गरुवंतं गंसिय ॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी । षीची राव प्रसंग दुह ॥
प्रारंभ करै संभरि धनी । जौरै बंध षुमान सह ॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना ।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं । तिथि सातें चहुआन ॥
समर सिंघ रावर दिसा । गुर जन मुक्यौ कान्ह ॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना ।

कवित्त ॥ बर पंचाइन सबर । सबर बंसी ससिपालं ॥
घेऱ्यौ तिन रनथंभ । सुबर जंपे बर कालं ॥
मान बीर पुकार । धाइ आई ढिल्लीवै ॥
अद्ध अद्ध पहु पंग । सध्य अद्धो बर है वै ॥

जोगिंदराव जग हथ्थ बर। महन रंभ उप्पर सबर॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। [1]तुम आओ रचि सेन बर॥ छं०॥ २२॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा॥ चित्रंगी चतुरंग सजि। बर रनथंभ सु काज॥
बर सहेट रावर समर। आवन बदि प्रथिराज॥ छं०॥ २३॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज॥ छं०॥ २४॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुँचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। महन रंभ आरंभ॥ छं०॥ २५॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त॥ महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत सन मंडिय॥
अट्ठ दौह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्वप [2]भानं॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत मिसि देही दानं॥
अग्रहन ग्रहन रिनथंभ मति। इह सुमिच आयौ पढ़न॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। महन रंभ बध्यौ बढ़न॥ छं०॥ २६॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन।
(२) ए. कृ. को.-मान। (३) ए. कृ. को. नाहि।

सुनि कन्हा चहुआन । रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कट्ठइन । मिलै जों कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न । सुबर षची बर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत । छच छल छांह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर । बेद भ्रम्म बंध्यौ चवै ॥
कालंक राइ कप्पन विरद । क्रित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग । हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गनं मुत्तिय माल दस । रष्षे कन्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय । वे'सब मनि, [१]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन । दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा ।

चले कन्ह बर संग न्रप । समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्जिहै । धरकि बीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन ।

कवित्त ॥ घरी पंच बर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुब्ब दान करि मंच । सुगुर पंचमि बुध [२]चारिय ॥
अंड चार भय हूर । फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्रयौ । छंड बिय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर । महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै । सुबर बीर चतुरंग [३]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्थ । जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥

(१) ए. कृ. को.-बर साहि, बर साई ।
(२) ए. कृ. को.-आरिय ।　　(३) ए. कृ. को.-राजि ।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गज्जिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुभ्भै न भान रज [2]मभ्भि सलीव। चक्कीय चक्कवे चलि सु क्कीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु रुक्कि अंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन रूभ्भि॥
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गुज [4]शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। बर बरन बीच सोहंत जाहि॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह। बोलंत सद्द कवि मधुर जीह।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुभ्भहि असद्द बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मंल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
बर दच्छिन समरंग। बीर जोगिंद प्रपंत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीह। (४) मो.-मत्त।

कुंभ अंब डोलंत । हथ्थ बरनै रस माई ॥
चहुआन सेन चिचंगपति । चांवद्दिसि बर बिड्डुरिय ॥
बर ढोह छंडि चंदेर न्रप । जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय ॥ छं० ॥३९॥
दूहा ॥ उत चंपे चहुआन ने । इत चंपे चिचंग ॥
मूंदि सास अरि सम दरी । जनु [1]चंप्यौ सु म्रदंग ॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त ॥ प्राची दिसि चहुआन । चब्यौ पच्छिम चतुरंगी ॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ । बीच अरि फौज सु रंगी ॥
दुहूं सेन [3]समकंत । [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी ॥
मनु राका रबि उदै । अस्त होते रथभग्गी ॥
ससिपाल बीर बंसी [5]विमल । दुहुन बीच मन मेर हुअ ॥
षह मिलै षेह षग्गह हन्यौ । चवै चंद रबि दंद दुअ ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अंनल पंष अंकुऱ्यौ । जुद्ध पंचाइन मंड्यौ ॥
इक सपंष षग वीय। पेट रनथंभ सु छंड्यौ ॥
पीठि पंड पावार । सु वर हुऔ नष पंषं ॥
एक मुष्ष वन बीर । धीर उभ्भौ विय मुष्षं ॥
न्रिम्मान बंभ बर पुंछ कवि । पुच्छ पाइ साधन समर ॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें । समर मोह भूल्यौ अमर ॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी ॥ मिले आंइ [6]धायं सु आहुठ्ठ राई । लगे बीर बथ्थै लगे लोह धाई ॥
कढ़ी बंक अस्सी ससी बीय गत्ती । बरै ज्वाल ह्वरं मनों हब्बि तत्ती ॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-चंपी ।　(२) ए.-चतुरंग ।　(३) ए. कृ. को.-चमकंत ।
(४) ए. को.-नग, नगा ।　(५) ए. कृ. को.-बिसल ।　(६) ए. कृ. को.-धाई ।

करै हक्क सीरुं महा मार मारं। धरं किति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सस्त्र बीसं [1]तुरित्तं बषांनं। तिनं सद्द अग्गैं दुरै वै निसानं॥
छं०॥ ४४॥
धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं॥
लगै धार धारं धरक्कै विवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं॥
छं०॥ ४५॥
कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनों ज्यों पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनों दंपती संजुर्ध की सुरत्तं॥
छं०॥ ४६॥
परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्यियै बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड झारी॥
छं०॥ ४७॥
जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]जरूरं। उड़ै रेंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव श्रोनी पलं भइ जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं०॥ ४८॥
तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं लफेरी सबद्दं॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग बानं मनों बग्ग पानं। रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै धाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं०॥ ५०॥
[3]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं॥
सुषं मेद पाटं सु घाटं घुमानं। भिरे भौर भारी सु ग्रब्बे उमानं॥
छं०॥ ५१॥
गहै नाग सुष्षी अरी जा उठायौ। मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहैं रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पर्यौ षग्ग षीची भरं चिचकोटं। जलं पष्प मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं०॥ ५३॥

(१) मो.-तुटितं। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

महादेव जुद्धं दिष्यौ मेस यानं। धनी चित्रकोटं ¹धसी सेन जानं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत वंसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुंद बल॥
बिचै समर रावर। नरिंद बीरन गाहरमल॥
उतै तेग उभ्भारि। इतै सिंगनि धरि बानं॥
छंडि निधक अरियान। उररि पारी परि तानं॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन। हवि मुष रुष मुक्कै नहीं॥
भर सुभर दार रष्षन सु बर। समर समर उभ्भौं पही॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम खरत्त बर समल। दिष्षि चहुआन कियौ बल॥
बांम मुष्ष अरोहि। नीर असि झल्ल सुषह झल॥
सौ सामंत छै सूर। सथ्थ प्रथुराज सु धायौ॥
सार कोट अरि जोट। पग्ग पल पंभ हलायौ॥
जै जैत देत जै करहि। देव बीर आनँद बढ्यौ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर। असि पहार धर भर चढ्यौ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि। मिलिय राव प्रति मान॥
समरसिंह रावर सु प्रति। चरन चंपि चहुआन॥ छं० ॥ ५७॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

(१) ए. कृ. को.-मधी। (२) ए. कृ. को.-कीय।

* दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मद्धि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम ॥
समरसिंघ दछिछन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं।
सैंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, त्रग रारी ॥
बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी ॥छं०॥६०॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विरुझाई ॥
परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई ॥
† वीरंग विचारै, डक्क हकारै, मंचं मारै, उभ्भारै।
छं० ॥ ६१ ॥
अफ्फार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर सूरं ॥
बर टोप समेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हँसि हूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥
बर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं, किल कालं।
‡ नचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, बरि बरि सूरं, धरि मालं ॥

---

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला टीक जँचता है।

(१) ए.-समनंजरि। † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को. हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

कर ब्रन्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं॥
छं०॥ ६३॥

चष छिंछत श्रोनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाईं।
कवि ओपम तासं, स्त्रर विलासं, माधव मासं, फिरि आई॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना।

कवित्त॥ दस क्रम्मन अरि ठेल। मुरिय पंचाइन सेनं॥
बीर छंक उत्तरी। मुत्ति भिरि रन रत नैनं॥
सुरस पियौ प्रथिराज। प्रगटि अंषिन जल झलकिय॥
पी अधरा रस पीन। प्रातसौ कौ मुष जक्किय॥
चहुआन सु बर सोरह परिग। समर सिंघ तेरह चिघट॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर। सहस पंच लुथ्थय सुभट॥ छं० ॥ ६५॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना।

दूहा॥ निंग्रह [1]नर बेंछंत न्रपति। अहि गवन्न सुष वान॥
पंचं अनी करि षेत चढ़ि। षेत अरक चहुआन॥ छं०॥ ६६॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड। सोई सिंघार स्त्रर बल॥
स्त्रत्त [3]कुलस तन जान। लभ्भ कित्तीति सुभट कल॥
जिहि मरन्न मन स्त्रर। मरन जेही मन उत्तरि॥
पंच पंच पथ गोत्र। फिर न एकठ्ठे नर नर॥

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नवर।
(३) ए. कृ को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है। पाठ भेद कुछ भी नहीं है।
(४) ए. कृ. को.-कुमल।

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्कि लग्गी नदिय॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुम्म व्यापं लग्गंन दिय ॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाइन ढाहै दीह॥ छं०॥ ६८॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया॥ पंच चिराकन मझ्झ न्रप। सो सोभित जुग्गिंद॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]थह। लिय पारस मंडि चंद॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभ्रित ससिपाल सु बंसिय॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बेंन बुझ्झियै। घोरि ढंकी अरि रंचै॥
कपट द्रोह करि दूक। पथ्थ टारे [3]पच पंचै॥ छं०॥ ६९॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल्ह फंद अरि कढ्ढि॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चकाव्यूह रचि ठढ्ढि॥ छं०॥ ७०॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय॥
मद सरक [5]तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह॥

(१) मो.-बर वीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) ए. कृ. को.-पंग।
(५) ए.-विन।

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुह्र लोह कढ्ढी बिभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कड्ढै, रसं रोस बड्ढै। अँगं अंग गड्ढै, कयं सूर कड्ढै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

असी अंच उड्ढै, घटं घट्ट गड्ढै। हकं सीस रड्ढै, षगं सूर कड्ढै ॥ छं० ॥ ७३ ॥

गिधं लोल रड्ढै, द्रुनं नंच ठड्ढै। थुती रंभ पड्ढै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

सिरं अंग बड्ढै, लोहं पच्छ कड्ढै। करं कित्ति मड्ढै, वकं बीन नड्ढै ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मुषं चंद पड्ढै, ...। सिँघ सम्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥ छं० ॥ ७६ ॥

संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ समरसिंघ दिष्यत सुबर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई ॥ छं० ॥ ७९ ॥

भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझ्झाई धाइ, असी बंक झाई ॥ छं० ॥ ८० ॥

कि रचं उड़ाई, ससी व्यंव पाई। सुतं [1]राति छाई, कवी कित्ति गाई॥
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्ति रासी, अवी अब्बि नासी। उपं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुड्डे ॥
अमर [3]बंध चिचंग। बीर पंचाइन बड्डे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोल्यौ विरुझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लद्ध नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लच्छि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्स। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतरे अड्ढ पहि॥
[5]यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्ह जलथानं लहि ॥छं०॥८५॥

(१) ए. कृ. को.-रारि। (२) मो.-सड्डे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मत्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति माननी। चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]हय नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतरी। कुमुद बर फुल्लि समथ्थै ॥
एक चिंत्त सोइ बाल। मीत संकर अस रथ्थै ॥
तेहि बाल संग में पूहुय लिय। बरन बीर संगति जुवह ॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवह देव नन मान वह ॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा ॥ * सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ बर बर नारि ॥
बे वर गज्जि नरिंद तूं। हसि हसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं० ॥ ८७ ॥
एन बयन रुपह रवन। इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजंत बर। सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल ॥ सुनि सुबर बरनी रूप। तिहि चढ़न बै न्रप भूप ॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह ॥ छं० ॥ ८९ ॥
वय काम द्रिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥छं०॥९०॥

---

(१) मो.-गति। (२) मो.-हय

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धनक वेदी काम। [1]द्रिग काल गौरभ वाम॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ। देयंत काम बजाइ॥ छं०॥ ९१॥
बरछिन्न उन्नित बाल। बर काम चित चढि साल॥
चित हरुअ गरुअ सुहंत। गुर गरू होत पढ़ंत॥ छं०॥ ९२॥
जिम जिम सु विघा आइ। तुछ भरत तुछ सरसाइ॥
मति लघू अलघु प्रमान। [2]अंब निबंद समान॥ छं०॥ ९३॥
बर मत्त पिछली जीअ। तहां रसन [3]हीनति पीय॥
गति हंस चढ़त सुभाइ। सुत बंटि [4]जसु अभिसांइ॥ छं०॥ ९४॥
सैसव सु सुतन सुषाइ। जोवन्न रस सरसाइ॥
तिसहूंत गजगति जानि। ....॥ छं०॥ ९५॥
जसु पन्न चित क्रम मान। जिम संधि प्रथम गियान॥
प्राचीय मुष रंग सूर। प्रगट्यौ सु काम करूर॥ छं०॥ ९६॥
बर बाल माहि सरुप। घट धरक कपट अनूप॥
वय बाल [5]जोवत काज। किप कपट उत्तर लाज॥ छं०॥ ९७॥
मधु मधुर [6]अम्रत जानि। बेजियन सीषत बानि॥
मति मत्ति बरनी षाइ। तहां बाल बेस [7]छिकाइ॥ छं०॥ ९८॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना।

कवित्त॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति। सु वह श्रोतान वढ़ाइय॥
तव लगि [9]भान नरिंद। बीर दुजराज पठाइय॥
[10]वर दुजराज पठाय। रतन उर कीनौ अप्पी॥

(१) ए. कृ. को.-दृग का लग्गौ सुभ बांम। (२) मो.-अंबं बिन्द समान।
(३) मो.-हीनित। (४) मो.-अभि जनु माइ।
(५) ए. कृ. को.-जोबन। (६) ए. कृ. को.-उंतम।
(७) मो.-लुकाय। (८) मो.-उपति।
(९) ए. कृ. को.-मान।
(१०) ए. कृ. को.-"हय हथ्थिय मनि मृत्त रतन उर किन्हो रप्पी"।

तिथ पंचम रवि भौम। लगन प्रथिराज सु थप्पौ ॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भी दुज्जन बहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय ॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लड्डिय ॥
अम्रत भाग चिचंग। सेन हाला हल सड्डिय ॥
बारुनी बीर अस्सिय सु झर। अरिन पाइ जस रतन लिय ॥
मह महन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस बर अप्प लिय ॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा ॥ तब लगि मंतन लगन दिन। न्त्रिप आषेटक जाइ ॥
बारू बन उभ्भौ न्त्रपति। मात दरस निस पाइ ॥ छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय सारंग राव सौलंकी का पितृबैर लेने का विचारकरना।

कवित्त ॥ बारु विरल बन न्त्रपति। राइ आषेटक सारिय ॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि बेर विचारिय ॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं ॥
पिता बैर बहु बंध। हुऔ कर नार समानं ॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ ॥
बर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान बर मंगयौ ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा ॥ बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त ॥
करि वसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंचीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर वीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भँति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। किति एक जुग जुग चलिय ॥छं०॥१०४॥
[1]किति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
किति काज बिक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
किति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
किति काज बर सिवरि। [2]मथ्थ कर कट्टि सु अप्पौ ॥
ॐ रष्यंत [3]अचल गल्हां जियनु। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। करन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगीलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाह्न सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव। मूल कट्टन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता बैर बहुबन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस।   (३) ए. कृ. को.-अचर।

ॐ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "कित्ती काज बिक्रम्म जैसे देसह धर लुदिकय" नहीं है।   (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।